Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

साहित्यानुवाद की समस्याऐं

Dr. Lila Ram*

Extension Lecturer, Department of Hindi, SMSD Govt. College Nangal Chaudhary

सार - *साहित्य का अनुवाद एक बड़ी चुनौती भरा कार्य है। यह बहुत कठिन कार्य माना जाता है। इसके अनुवाद को लेकर काफी विवाद रहा है। साहित्य के अनुवाद पर H.de Forest Smith ने कहा है Translation of Literary work is as tasteless as a stewed strawberry. वस्तुतः साहित्य का अनुवाद अधिक दुष्कर तो है लेकिन इसे असंभव नहीं कहा जा सकता। विश्व में अब तक साहित्य के काफी संख्या में अनुवाद हुए है। इन अनुवादों को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है और ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि साहित्य का अनुवाद हो ही नहीं सकता, हाँ यह जरूर कि साहित्य के बहुत कम ही अनुवाद मूल पाठ का पूरी तरह प्रतिनिधित्व करते है, किन्तु हम यह कह सकते है कि मूल साहित्य और उसका अनुवाद दोनों एक हैं। फिर भी मूल पाठ और अनुवाद में अंतर का प्रश्न तो रहता ही है, क्योंकि एक मूल और दूसरा अनुवाद जो ठहरा, हमें यह मानकर चलना होगा कि मूल मूल है और अनुवाद अनुवाद, तो साहित्यानुवाद असंभव नहीं होगा। वैसे तो किसी भी रचना का अनुवाद सरल नहीं होता, किन्तु साहित्य का अनुवाद इसलिए भी कठिन होता है कि कई बातों में साहित्य अन्य सृजन से अलग होता है। साहित्य में कुछ तत्व ऐसे होते है, जो अन्य सृजन में नहीं होते तथा जिन्हे अनुदित करना बहुत कठिन होता है। साहित्य की पद्य तथा गद्य विद्या पर विचार करें तो स्पष्ट होता है कि गद्य के अनुवाद की तुलना में पद्य का अनुवाद अधिक कठिन होता है। पद्य के अन्तर्गत आने वाली विद्या "कविता का अनुवाद बहुत बड़ी चुनौती है। यह दुष्कर कार्य माना जाता है, एक हद तक असंभव भी।"1 इसमें कथ्य तथा अभिव्यक्ति दोनों का योग होता है जो पाठक पर प्रभाव छोड़ता है। यहाँ कथ्य व अभिव्यक्ति दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, किन्तु अनुवाद करते समय प्रत्येक भाषा में इस प्रकार का तालमेल उसी रूप में नहीं बैठाया जा सकता, ना ही एक सा प्रभाव पैदा किया जा सकता।*

----------X----------

प्रस्तावना

काव्य के अनुवाद में मूल काव्य के तत्वों का कुछ न कुछ अंश छूट जाता है। इस संदर्भ में डॉ. प्रभाकर माचवे का कथन है " वस्तुतः काव्यानुवाद एक शीशी मे भरे इत्र को दूसरी शीशी में डालने जैसा है, जिसमें कुछ न कुछ इत्र हवा में अवश्य विलीन हो जाता है।"**2** इस कुछ के विलीन के अलावा कभी कुछ ऐसा अंश भी जुड़ जाता है, जो मूल में नहीं होता। अनुवाद में नया अंश जुड़ने पर वह मूल से दूर हट जाता है, लेकिन डॉ. भोला राम तिवारी अनुवाद में नया अंश जोड़ने के पक्ष में रहे हैं। उन्होंने लिखा है "अनुवादक को अपनी रूचि के अनुसार मूल को फिर से ढालना चाहिए - भूसा भरे गीध की अपेक्षा में जीवित गोरैया चाहूँगा।"**3** फिर भी अनुवाद में इस प्रकार के विचार में भी सुधार की संभावना बहुत है, क्योंकि अनुवाद में नया अंश जुड़ने या कुछ छुटने पर वह मूल से दूर हट जाता है। इसके लिए हमें अनुवाद की सफलता के लिए मूल पाठ को समझना होगा। अनुवादक के लिए अनुवाद की प्रक्रिया में केवल मूल पाठ के अर्थ या आशय की जानकारी ही प्रर्याप्त नहीं होती, उसे मूल रचनाकार की विषय वस्तु से भाव का तालमेल बैठाना होता है। उसमें निबत अनुभूति को उसी तरह जीना पड़ता है, जिस प्रकार उसे मूल रचनाकार ने जिया होगा। रचना के माध्यम से यह एक प्रकार का प्रवेश तथा अपनी संवेदना का दोहरा विस्तार करना होता है। दूसरे की संवेदना में भागीदारी के लिए उसे आत्म नियंत्रण की प्रक्रिया से गुजरना होता है। चूकिं दूसरी भाषा में अनुवाद सौ फीसदी मूल जैसा ही हो यह बहुत कठिन कार्य है। साहित्यकार जिन शब्दों को चुनकर साहित्य में लाते हैं। वे शब्द प्रायः सामान्य अर्थ के अतिरिक्त कुछ और अर्थ भी देते हैं। ऐसे में अनुवाद के लिए दूसरी भाषा में वैसा ही प्रति शब्द उपलब्ध करना बड़ा मुश्किल हो जाता है, "हर भाषा के हर शब्द का अपना अर्थ बिम्ब होता है, जो सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि से सम्बद्ध होता है। दूसरी भाषा का उसी का समानार्थी शब्द उस पृष्ठभूमि से युक्त न होने के कारण वैसा अर्थ-बिम्ब नहीं उभर सकता।"**4** मान ले साहित्य में 'बिजली' शब्द आया। इस शब्द के स्थान पर अंग्रेजी में Thunder रखें तो इसमें कड़क स्पष्ट होती है और यदि Lightning रखें तो चकाचैंद्य

www.ignited.in

स्पष्ट होती है। अतः साहित्य की भाषा में ये शब्द बिजली के प्रति शब्द नहीं हो सकते, जबकि ये सामान्य भाषा में है। इसका अर्थ यह हुआ कि अनुवाद करने में मूल की तेजी और तरलता घट गई और नयी वृद्धि कड़क या चकाचैंध के रूप में आ गई। साहित्य की भाषा प्रायः अलंकार युक्त होती है, ऐसे में काव्यानुवाद करते समय अलंकारों का वैसा ही अनुवाद असम्भव सा हो जाता है। जैसे कनक-कनक ते सौ गुनी - का अनुवाद तब तक पूर्ण नहीं माना जाता जब तक वैसे ही प्रति शब्द उपलब्ध ना हों। इसी तरह छंदों का अनुवाद भी अलंकारों जितना ही जटिल है। काव्य में छंदो की अपनी गति होती है। उनका अपना प्रभाव होने के साथ एक सीमा तक काव्य के भाव से भी नाता होता है। ऐसी स्थिति में अनुवाद और भी कठिन हो जाता है। क्योंकि प्रत्येक भाषा में छंदों के प्रकार व प्रभाव अलग - अलग हैं। एक भाषा के छंद को दूसरी भाषा के छंद में ज्यों की त्यों उतार पाना बहुत कठिन होता है। अगर उतार भी दिया जाये तो बहुत कुछ बदल जाता है। इसके अलावा एक ही साहित्य का अनुवाद अनेक व्यक्तियों द्वारा होने पर अनुवाद में काफी अन्तर देखा जाता है। डॉ. भोलाराम तिवारी के अनुसार - ‘‘ऐसा केवल इसलिए होता है कि काव्यानुवाद पुनर्रचना है, अतः उसमें अनुवादक कवि का अपना व्यक्तित्व बड़ा प्रभावी होता है।’’**5** उदाहरण के लिए उमर खैयाम की एक रूबाई का दो अनुवादकों द्वारा किए गए अनुवाद में अंतर देखिए -

आमद सहरे निदा जे मयखान -ए-मा।

के रिन्द खराबाती व दीवान -ए-मा।

बरखेज कि पुरकुनेम पैमाना जो मय,

जहाँ पेश कि पुरकुनंद पैमान -ए-मा।

खैयाम की मधुशाला (**2**) बच्चन का अनुवाद देखिए -

उषा ने ली अँगड़ाई हाथ,

दिए जब नभ की ओर पसार,

स्वप्न में मदिरालय के बीच

सुनी तब मैंने एक पुकरा -

‘‘उठो, मेरे शिशुओं नादान,

बुझा लो पी-पी मदिरा भूख,

नहीं तो तन-प्यासी की शीघ्र

जाएगी जीवन-मदिरा सूख।’’

इसके अलावा (मधुज्वाल, 2) सुमित्रानंदन पंत के अनुवाद को देखिए -

खोलकर मदिरालय का द्वार

प्रातः ही कोई उठा पुकार

मुग्ध श्रवणों में मधु र व घोल,

जाग उन्माद मदिरा के छात्र!

ढुलक कर यौवन मधु अनमोल

शेष रह जाए नहीं मृदु मात्र,

ढाल जीवन मन्दिरा जी खोल

लबालब भर ले उर का पात्र।

उपर्युक्त अनुवादों में प्रत्येक ने मूल बात को अपने ढंग से कहा, अपनी शैली में कहा। इस संदर्भ में डॉ. नगेन्द्र ने कहा है- ’’शैली अपने आप में ही एक प्रकार का अनुवाद अर्थात मूल अनुभूति का शब्दानुवाद है। शैली अपने आप में अपूर्व अभिव्यंजना है-भाव या विचार को अभिव्यक्त करने के लिए। अतः अपूर्व को दूसरी भाषा में रूपांतरित करना तो और भी अपूर्व हुआ।’’**6** इस प्रकार हम देखते हैं कि साहित्य के अनुवाद में अनुवादक का व्यक्तित्व उभर कर आ जाता है, जिससे अनुवाद में अन्तर आना स्वाभाविक है। कोई भी अनुवादक जिन क्षणों को अनुवाद में उतारता है, वे उसके अपने होते हैं। किसी भी रचनाकार के अपने समस्त क्षणों को कोई दूसरा अनुवादक जी नहीं सकता, चाहे वह मूल रचनाकार की तुलना में कितना भी बड़ा रचनाकार क्यों न हो। ‘‘ वस्तुतः अनुवाद का कार्य स्लेट पर सीधी लकीर खींचने के बजाय पानी पर लकीर खींचने जैसा कठिन है। यह कोई राजमार्ग नहीं है जिस पर स्रोत भाषा की रचना लक्ष्य भाषा तथा अपने संपूर्ण कलात्मक सौन्दर्य एवं संवेदन के साथ सहजता और सरलता से मदिर पदन्यास करें, परन्तु इसमें अनुवादक को अनुवादकीय मर्यादाओं में रहकर मूल भाषा की सामग्री को लक्ष्य भाषा में इस प्रकार उतारना पड़ता है कि मूल की लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन न हो।’’**7** अतः हम पाते है कि साहित्य का अनुवाद बहुत कठिन कार्य है लेकिन असंभव नहीं। जो कठिनाईयाँ काव्य के अनुवाद में आ सकती है, वे सभी प्रकार के साहित्यानुवाद में नहीं मिलती। काव्य की भाषा अपने अर्थ-स्वरूप में ज्यादा जटिलता लिए होती है,

www.ignited.in

जबकि सामान्य भाषा में अभिव्यक्त हुए साहित्य का अनुवाद सरल हो सकता है। जिस भी सृजन का अभिव्यंजना पक्ष सपाटता लिए हुए होगा उसका सृजन उतनी ही आसानी से हो पाता है। प्रत्येक रचनाकार अपनी बात अपनी भाषा में अभिव्यक्त करता है। उसके बड़प्पन का अहसास उसकी मूल रचना को पढ़कर ही किया जा सकता है, जबकि अनुवाद में हम उसके मूल की अभिव्यक्ति में वही स्वाद नहीं पाते हैं जो मूल रचना का होता है। अतः साहित्य के अनुवाद का कार्य कठिन तो है परन्तु सभी कठिनाईयाँ साहित्य की अन्य विद्याओं मे समान हो यह जरूरी नहीं। साहित्य की एक विद्या 'नाटक' का अनुवाद काव्य के अनुवाद से कई बातों से भिन्न होता है। सामान्यत इसके अनुवाद में दो समस्याऐं सामने आती हैं, शैली की प्रधानता तथा अभिव्यंजना प्रधानता। यहाँ अनुवादक को कथ्य के साथ -साथ कथ्य पद्धति पर पर्याप्त ध्यान देना होता है। कहीं-कहीं यदि कविता की पंक्तियाँ आ जाए तो वहाँ काव्यानुवाद सी समस्याऐं आती हैं। नाटक यदि पठनीय है तो उसी के अनुरूप अनुवाद करना होता है और यदि नाटक अभिनेय है तो वेसा ही अनुवाद करने का प्रयास रहता है। ऐसे में अनुवादक को रंगमंच का बोध होना चाहिए तथा उसी के अनुरूप अनुवाद करना चाहिए। यहाँ संवाद तथा अभिनय के तालमेल वाला अनुवाद ही करना होता है। भाषा के संदर्भ में अनुवादक को यह देखना होता है कि अनुवाद की भाषा शैली मूल नाटक जैसी होनी चाहिए। ''पाश्चात्य नाटकों के भारतीय भाषाओं में अनुवाद में और भारतीय नाटकों के पश्चिमी भाषाओं में अनुवाद में यह समस्या विशेष रूप से उत्पन्न होती है। रंग निर्देश, नाटकीय, औपचारिकताऐं, लोक रंगमंच की युक्तियों का प्रयोग इत्यादि के रूपांतरण में अनुवादक को अपनी कुशलता एवं सजगता का परिचय देना होता है।"**8** वरना नाटक के अनुवाद के दौरान भी पद्य जैसी कठिनाइयों से सामना होता है। साहित्य की विद्या कथा साहित्य के अन्तर्गत आने वाला सृजन - उपन्यास व कहानी का अनुवाद काव्य और नाटक की तुलना में आसान जरूर है लेकिन इनके अनुवाद में भी अनेक समस्याऐं आती हैं। इनके अनुवाद में रचनाकार की मनोवृति को उसी की शैली में उतारने की समस्या होती है। इस संदर्भ में डॉ. जी**0** गोपीनाथन ने लिखा है - ''उपन्यास और कहानी के अनुवाद में शैली और शिल्प की शुक्ष्मताओं, अर्थच्छायाओं, कथाकार का व्यंग्य, प्रतीकात्मक एवं काव्यात्मक प्रयोग इत्यादि पर बहुत अधिक ध्यान देना पड़ता है।''**9** यहाँ संस्कृति के अंतरण का ध्यान रखते हुए पात्रों के संस्कारों को ज्यों का त्यों उतारने की समस्या होती है। वे पात्र मूल रचना में व्यक्त भाषा के भावों को ज्यों का त्यों उसी देशकाल -सा अहसास करायें, यह समस्या आती है। इन सभी सन्दर्भों को ध्यान में रखते हुए नाटक विद्या का अनुवाद करना होता है, तभी सफल अनुवाद कहा जा सकता है। कुल मिलाकर साहित्यानुवाद में समस्याऐं तो बहुत होती है लेकिन उन समस्याओं में असमानता होती है जो साहित्यानुवाद को कठिन बनाती है। हाँ, यह जरूर है कि साहित्य की गद्य विद्या के अनुवाद में कठिनाईयों की समस्या कुछ कम जरूर हो जाती है। बाकी साहित्य के अनुवाद मे समस्याऐं तो हैं इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। हाँ, इन समस्याओं का समाधान खोजा जा सकता है, जोकि असम्भव नहीं है।

संदर्भ सूची

1. प्रयोजनमूलक हिन्दीः सिद्धांत और प्रयुक्ति – डॉ. जितेन्द्र वत्स - निर्मल पब्लि केशन्स्, दिल्ली - संस्करण्ः 2005 - पृष्ठ संख्याः- 134
2. अनुवादः समस्याऐं और समाधान – डॉ. सत्यदेव मिश्र, डॉ. रामाश्रय सविता-सुलभ प्रकाशन, लखनऊ - संस्करणः 1999 - पृष्ठ संख्याः- 10
3. अनुवाद विज्ञान – डॉ. भोलाराम तिवारी - शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली - संस्करणः- 1984 - पृष्ठ संख्याः- 133
4. उपर्युक्त - पृष्ठ संख्याः- 135
5. उपर्युक्तः- पृष्ठ संख्याः- 136
6. अनुवाद साधना – डॉ. पूरनचंद टंडन - अभिव्यक्ति प्रकाशन, नई दिल्ली - संस्करणः- **1998** - पृष्ठ संख्याः- 123
7. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. विनोद गोदरे - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली - संस्करणः- 2001 - पृष्ठ संख्याः- 119
8. अनुवादः सिद्धांत और प्रयोग – डॉ. जी**0** गोपीनाथन -लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद - संस्करणः- 2001 - पृष्ठ संख्याः- 32
9. उपर्युक्त - पृष्ठ संख्याः- 33

www.ignited.in

Corresponding Author

Dr. Lila Ram*

Extension Lecturer, Department of Hindi, SMSD Govt. College Nangal Chaudhary